* श्रीहनूनाटक भाषा *

(जिसमें)

अति सरल और मृदुल छन्दों में श्रीमद्रामायण के सुन्दरकाण्ड की सम्पूर्ण कथा का आशय मुख्य बोल चाल की खड़ी बोली में वर्णित है

(जिसको)

ज़िले बिलासपुर निवासि परमप्रेमी सज्जन श्रीबख़्शीराम जमादार ने जूलाई सन् १८८१ ई० में निर्माण किया अब पुस्तक निर्मापक की अनुमति से

दूसरीबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपी

अगस्त सन् [illegible] ई० ।

विज्ञापन पत्र ॥

प्रकटहो कि यह मनोहर पुस्तक बहुत दिनों से मण्डला प्रांत में बहुधा लोगोंके पास बनी अधबनी पड़ीथी यहां तक कि प्रथम उसको आरम्भ किसने किया इसकी भी किसीको ठीक ख़बर नहीं लेकिन लोगोंमें इसकी चाहना बहुत थी इसकारण मैंने शोधकर यथामति उसको जहां तहां घटाव बढ़ाव करके श्रीरामचन्द्र वो बजरंगबली की कृपासे पूर्णकी अब आशा परमेश्वरसे यहीहै कि यह सुन्दरपुस्तक जो अतिसरल भाषा अर्थात् बीच खड़ीबोली उर्दूके लिखीगई है लोगों में प्रकाशित हो बहुधा पुस्तकें जो बनीहैं वे जिस भाषामें बनीहैं उस भाषाको भलीभांति जाने बिना एका एक समझ में नहीं आतीं परंतु इस पुस्तक में वह कठिनाई नहीं जो लोग थो-

ड़ासा भी इल्म हिन्दी जानते होंगे वे इसको पढ़कर इसके आशयको भलीभांति समझसकेंगे दुष्ट जनतो निस्सन्देह स्वभावानुसार इसे देख-कर हँसेंगे परन्तु मुझे यह पूर्णआशाहै कि सज्जन लोग इसे प्रीतिसे ग्रहण करेंगे और केवल राम नाम की चरचा समुझ इसकी प्रशंसा करेंगे क्योंकि इसकी गिनती कविता में कदाचित् नहीं होसक्ती है और न मुझे उसका किसीप्रकार दावा है भूल चूक दया दृष्टिसे क्षमा करें यह भा प्रकटहो कि हक्क तालीफ़ इस पुस्तक का मैं अ-त्यानन्द से श्रीमुन्शी नवलकिशोर साहिब मा-लिक अवध अख़बार शुभस्थान लखनऊ को देताहूं ॥ इति ॥



अथ हनूनाटक प्रारंभः॥

रकार रामचन्द्रहैं मकार मात जानकी।
सकार सीतारामहैं हकार हनूमानकी॥

हनूमान लङ्कागमन् १॥

शिवा शम्भुके पांव पङ्कज गहौं। बिना-यक सहायक सदा दिन चहौं॥ भजौं राम आनन्द के कन्द को। दिया जिन हुक्म पवनके नन्दको॥ दिया मुद्रिका राम कपि को तबै। सिया दीजियो ख़ब्र लैहौ सबै॥ चरन बन्दि करसो चला राम काम। हुये

सङ्ग अङ्गदनलौ नील जाम ॥ लखा जाय दरियाव भारी भरा । सभों के दिलों शोच गाढ़ा परा ॥ हनू यों कहैं यार कैसा करैं । किसी भांति गम्भीर दधि को तरैं ॥ यहां से उड़ें सिन्धु लंका लहैं । सियाकी ख़बर लै प्रभूसे कहैं ॥ कहा हेर अङ्गद सबै यार को । मुशक्किल नहीं है कछू पारको ॥ बहुरि आवने का मैं धोखा करूं । इसीहेतु यारो मैं दिल में डरूं ॥ भयाहूं जो बुड्ढा कहैं जाम यौं । न ताक़त रही है कठिन काम थौं ॥ जो होता कदाचित् उसीभांति का । तो मैं कूद जाता मुशक्किल न था ॥ कहैं नील नल ये कठिन काजहै । न जल से चले ज़ोर कछु आजहै ॥ गिरे बीचमें जो कहीं जा भई । सबै जिन्दगानी अकारथ

गई ॥ कहैं हेर हनुमन्त हँसके तबै। रहौ रोज़ पांचक इतै तुम सबै ॥ लखौं आज जाकर वह लंकापुरी। जहां दनुज की भीर भारी जुरी ॥ चढ़ा शैल के शिखपर बन्दरा। न जलको किसी भांति दिलमें डरा ॥ लिया मुन्द्रिका दाबि मुखबीचही। किया जानकी ध्यान उरमें सही ॥ झपटकर शिखरकूद ऐसा चला। मनौ रामका बान छूटा भला ॥

सुरसा आख्यान २ ॥

जो देवतोंने देखा हनूमानको। कि जाता है निरशंक वो लंकको ॥ वहीं नाम सुरसर जो माता अहन। पठाया उसे ये सुनाकर बचन ॥ अभी जाके कपिकी परिक्षा करौ। न शंका गुनौ तुम न मन में डरौ ॥ सुनत बैन सुरसा चली मु पसार। कि मानौ बो

लिलेहै दम में पहार ॥ झपटके वो आई
हनूपासहै । कहा खूब मेवा मिला आजहै ॥
बहुत दिनसे भूखी न खाईथि खाज । मिला
तू बड़े क़िस्मतों से है आज ॥ अभी चख़
के डाढ़ें गरम मैं करूं । न खाऊंगी जब
लग न धीरज धरूं ॥ हनू हँस कहा सुन
अरी बावरी । न इतना ख़फ़ा होके घुर-
कावरी ॥ मैंहूं दूत रघुबर पवनका कुमार ।
चला खोजने सीयको सिन्धुपार ॥ जो कर
रामका काज जल्दी फिरूं । सिया मातका
हाल प्रभु से कहूं ॥ तो फिर जल्द आऊंग
मैं तेरे पास । न कर अपने दिलको ज़रातू
उदास ॥ तबै खायलेना कहा मानतू ।
न कर राह खोटी मेरी आजतू ॥ न सुरसा
ने कुछ बात सुनकर तभी । वहीं मुखको

खोलि के लीले अभी॥ बढ़ाया हनूने तभी गातको। तो हैरत हुई उस सरप बाम को॥ तो फिर मूको चौड़ा किया चारकोस। हनूजी वहीं होगये आठकोस॥ जो सोला का अन्दाज़ सुरसा किया। तो बत्तिस पवनसुत तुरत बनगया॥ तो सुरसा लगा होंठ इक पांवतर। लगायादुजाजाय अस्मानपर॥ तो धररूप छोटा हनू फिर सँभल। वहीं पैठ मूसे वो आया निकल॥ कहा अबतो कहना तेरा मैं किया। बिदा दे मुझे जाय खोजूं सिया॥ उसीवक्त सुरसाने आशिष दिया। सुफल कामनाहो मिलैं अब सिया॥ मुझे देवतों ने था भेजा इधर। कि जांचोंतो ताक़त हनू जायकर॥ सो सब भांति हुशियार पाया तुम्हें। न शंका

रही जीवमें कुछहमें॥ करोजाय पूरन सुफल काजको। मिलाओ श्री रामसे मातुको॥ यह कहती हुई वह उड़ी फिर गगन। चला गर्ज बलवान मनमें मगन॥

लंकिनी कथा ३॥

न जिस्को बिलँब एक सायत भया। छिनकमें पवन पुत्र लंकागया॥ शहर का तमाशा अजब देखना। सियासोध लेना यही कर्मना॥ चलारैनके बंक निरसंखही। लखा इक अजब ख्याल मगमेंसही॥ खड़ी एक आगे सुघर कामिनी। अँधेरी निशामें मनौंदामिनी॥ झपटकर हनूसे वो पूछेखड़ी। कहां तू चला कौनभेजा बली॥ अजी मुख से बात अपने सांचीकहो। जो तुम जान अपनेको राखनचहो॥ खड़ा चोरसा आज

मग़रूर तू। न जानू तुझे कौनरे क्रूरतू॥ अरी नाम मेरा हनूमान है। पठाया हमें आज श्रीरामहै॥ हरी मात सीता किसी चोरनै। उसे ढूंढ़ताहूं मैं ब्याकुल मनै॥ सिया रामकाहै भरोसा मुझे। वह मालिक हैं मेरे न डर कुछ मुझे॥ न तुम जानपैहो शहरमें सुनौ। सोहौं लंकदेबी हियेमें गुनौ॥ सुना बीर हनुमान गुस्सा किया। उसीके जुबा एक छक्कड़ दिया॥ तमाचा लगा मुर्छे धरनी पड़ी। रहाबीर पछताय तब उस घड़ी॥ बनी सुन्दरी वह बिमानै चढ़ी। उसी के ज़बांसे लब्ज़यों कढ़ी॥ अजी पवन के नन्द धीरजधरो। त्रिया मारनेका न धोखा करो॥ लिखाथा बिधाता सही सो भई। मुझे आगदीजो यही कहगई॥

पतालेना हनुमान जीका ४ ॥

भँवरभेष धरके जो आगे चला। हुआ भोर रविको बिलोकया भला ॥ चहूं ओर देखा जो कंचन अटा । तिन्हों से उठे खूब छबिकी घटा ॥ चमकते कँगूरे महलमें घने । बनीहै इमारत न कहतेबनें ॥ बड़ाथा दिलावर शहरमें चला । क़दमूको बढ़ाकर घरोंमें चला॥ घरोंघर नगर पैठ देखन लगा॥ न पाया सिया सोध कोई जगा ॥ दनुज देह बिकराल सोवैंपरे । किये बारुनी पान आनँद भरे ॥ उसे देखता जब वह आगे चला । तमाशा शहरका बिलोकया भला॥ कहीं बाजते ढोल मिर्दंगहैं । कहीं नाचते गावते रंगहैं ॥ कहीं सुन्दरी देह भूषण सजे । कहीं द्वार देखो नगारे बजे ॥ कहीं

ख्याल नटकेसो देखत चला। ख़लक जिस्त माशेमें आवे भला॥ कहीं बांसुरी की अजब तानहै। नचैं नाग कन्या अजब ठानहै॥ सुआ सारिकाको पढ़ावैं कहीं। अजब रूप की बाम देखा वहीं॥ कहीं खूब औरत गुहैं मालको। कहीं बीच हीराकहीं लालको॥ बिलोक्या इसीभांति सब धामको। नपाया कहीं जानकी मात को॥ सियाकी ख़बर लै डगर फिर चला। भुवन कुम्भ करना बिलोक्या भला॥ हँसाबीरहनुमत उसे देखके। प्रलय कालका मेघ उसे लेखके॥ बजै नासिका मेघ भादों मनो। अतीदेह उत्तंग सुर गिर मनो॥ चशम युगजो उसके बने तालहैं। श्रवन कन्दरासे शिखर भालहैं॥ उधरसे चला... ...नी लखा। अचल

बिंदकैसा त्रिलोक्या भला ॥ तिन्हों बीच ऐरावती सोहता। फटक शैलसी छबिमनो मोहता॥ धवल चार उसके बने दन्तहैं। मनो सिंधघटामें सुभग पंथहैं ॥ झिरैं बारुनी तासुके चार भाल। करैं भौंरगुंजार तामें बिसाल॥ चला आगेहू बाजशाला गया॥ तहां ये सुलक्षन बिलोकत भया॥ घरोंघर बिलोक्यासबै लंकको। न पाया कहीं जानकी मातुको ॥ इसी भांति लंकासबै छानली। नज़र ना पड़ै कहूँ सिया जानकी ॥ चला बीर आगे महलमेंगया। सो चौदहसहस नार देखतभया॥ सबैहैं सुलक्षन प्रिया बंदिनी। सबै भूपकी प्राणप्यारी गुनी ॥ सबै पद्मिनी अंगसों बासहैं। सबै दश बदन के सदा पासहैं। खड़ी हाथ बांधे सबै बामहैं।

झलंके हियापर सुमनमालहैं॥ लसे अंगतर
फुल सबे अंगमें। सखीगन बिनादन स-
कल संगमें॥ सभोंके रतन दीप उजियारहैं।
कनकके अटामन जगाजोतहैं॥ तिन्हें देख
हनुमन्त आगेबढ़े। महल में जो रावन के
जाकर अड़े॥ कनक सोध मनमन जगा-
जोतहैं। रतन शशिमरीचन उदित होतहैं॥
तहांकी सकल शोभताको कहै। किया जहँ
सदाबास ऋतुराज है॥ जधाहै बनी काम
आराम की। कहीं नापरै छब मुझे धामकी॥
कनकके पलँग पर नृपतहै परा। किये दे-
वतोंने सुमन बिस्तरा॥ ज़रीकश चँदोवा
पलँगपर तना। उठे झोक रम्भा सदनमें
घना॥ मते मद मलंदिन करतसोरहैं। रतन
दीप उजियार चहुं ओरहैं ॥ पड़ी नारि

मन्दोदरी संगमें। पिया साथ सोती पड़ी रंगमें॥ छुटीलट कपोलन रही आयके। रहीसोय नागनसुधा पायके॥ पिया संग मन्दोदरीयों लसी। मनौ नील घन चंचला थिर बसी॥परीदेखकर शर्मखावे जिसे।नसे गर्भ सब राजोदेखे उसे॥ सुता नागकी पांव दाबैं घनी। ढुरे बावरम्भा अजब छब बनी॥ सियारूप लखकर हनू रिसकिया। इसे क्या बिधाता करम लिखदिया॥ फिरैं राम बन बन सिया बिन उधर।ज़राख़ौफ़ नाहीं सियाको इधर॥सिया शोचभारी करूं क्या अभी।सभी ऐसबाज़ी मिटादूं अभी॥ किधौंकेश धरके कढोरौं अभी। सभीराज धानी होगारत अभी॥किधौं लंक उलटाय बारिधधरूं।किधौं दुष्टको रामपगतर करूं॥

हनू फिर समुझ कुछ दिलोंमें किया। उसी
दानवी कीपरीक्षा लिया ॥ भँवर रूपहोकर
जो आगे गया। तहां बारुनी झोंक
मुखसे भया ॥ तबै बीर जाना ये सीता
नहीं। येतो नारिमन्दोदरी है सही॥ सियाके
बदन बास अंबोजकी। नहीं मातु सीताहै
इस ओजकी ॥ मनै आपने कीस निन्दा
करै। हिये जानुकी आपको बहुडरै॥ हुआ
पाप मुझको है इस बातमें। कहै बैन ऐसे
जो अज्ञात में ॥ वृथाचित्त अपनेसे धोखा
किया। सदा आदि माता सतीहै सिया॥
सकल सृष्टि पालै जो चितमें धरे। रचे
जग्त चाहै प्रलय फिर करे ॥ कही बात
बेढब करूं क्या हरी। ज़बां आज मेरी न
भूमें गिरी॥ गुनहगार बन्दा महर कीजि-

यो। श्री जानकीजी दया कीजियो॥ वहां
से फिरा बीर आगे चला। पड़ी दानवीहै
सो देखा भला॥ बड़े गिर सिरगसे बने
दंतहैं। बिरौनी दृगौंमें लता पंतहैं॥ चुवत
अंग पानी पसीने बहैं। कि मानों पहाड़ों
से नाले बहैं॥ घने केश घूंघर बने मुण्ड
हैं। मनो रीछगनके रहत झुण्डहैं॥ बड़ी
ग्राज ना नासका धुनकरी। मनौ सिंहनी
गर्ज्ज गिर कंदरी॥ नयन जुगजो उसके
बिलोकया भला। महातालके ताल देखा
भला॥ हनूमान ऐसी सुपनखा लखी।
मनौ कालके बामकीहै सखी॥ बिना नास
का कालखा तुंडहै। मनौ देह धौला गिरी
रुंडहै॥ किया बीर हनुमानपर नामहै।
लिया हाथ इस्को लषन रामहै॥

विभीषण मिलाप ५ ॥

वहांबीर हनुमत जो आगे बढ़े। तो तुल-
सीके चौरे नज़र कुछ पड़े ॥ मनै आपने
कीश अचरज किया। कि मंदिर भि हरिका
दिखाई दिया ॥ कहूं क्या मैं शोभा उस
धामकी। बिराजी थि मूरत जहां रामकी ॥
हनूमनमें आनँद बहुत मानता। गुसैयां
समुझ शीशको नावता ॥ कहाहै बिधाता
ये क्या बात है। यहां तो दनुजका सदा
बास है ॥ यहां काम क्या रामके नामसे।
सदा बैरहै नाम भगवानसे ॥ यहां कौन
सज्जन बड़ी प्रीतिसे। जपेराम सीता जो
आनन्दसे ॥ समुझ कुछ दिलों में किया
फिर वहां। किहोते बदोंमें क्या नीके नहीं ॥
जहां देखो कांटे वहां फूलहैं। अजब क्या

जो हो भक्त हनू यों कहैं॥ मिलाप इससे हटके करूंगा मैं आज। न साधनसे बिगड़ा कभी अप्र काज॥ बदल भेष ब्राह्मन वहीं धायकर। वो मीठे बचनसे कहा जाय कर॥ कि हे मीत जपताहै जिस नामको। मैं आया उसी रामके कामको॥ है वाजिब मेरी रहनुमाई तुझे। कि पक्का भरोसाहै तेरा मुझे॥ बिभीषण वहीं दौड़ बाहर निकल। सो परनामकर पूछता वो कुशल॥ कि हे देवता जानता मैं नहीं। कि ब्रह्मा विशुनहो या शिव तुम कहीं॥ किहौ राम मेरे जो मनमें बसो। सदा मेरे मनमें वो उरमें बसो॥ सो मुझपर दयाकर अनुग्रह किया। कि पावन मेराधाम पगसे किया॥ पता जल्ददो दूर शंका करौ। मेरे मनका

संदेह जल्दी हरौ ॥ कियारूप असली सो उस आनहै। किहौं दूत रघुबर हनू नाम है ॥ उसी रामका दास मैंभीहुं तात। कि है ध्यान जिस्का तुझे दिन वो रात ॥ पिताका हुकम मान श्री रामचन्द्र। गये बन लषन साथ आनन्द कन्द ॥ उन्हीं साथ श्रीजानकी मातुथीं। सदा साथ रघु-नाथके पासथीं ॥ जरासा बिछोवा पड़ा बीचमें। सो कोइदुष्ट हरलेगया आनमें ॥ उसे खोजताहूं मैं अबतक बिकल। कि जलथल वो आकाश ढूंढ़ा सकल ॥ लगा कुछ पताहै यहां जानकी। लेकिन है ख़बर ना मुझे धामकी ॥ बिभीषणने सारा पता तब दिया। मिले जिस यतन से वो माता सिया ॥

प्रथम भेंट सीताजी से ६॥

उसी तब पतेसे वह आगे चला। हुआ भोर रबिको बिलोक्या भला॥ किया सिंध अस्नान आराम सो। लगा ध्यानहै राम की बामसो॥ अरघ अंजुली जोर रबिको दिया। हनू फिर सियाकी खबर चितकिया॥ नगर हेर रावन लखा बाटिका। लगे जहँ गुलमहैं अजब ठाटका॥ बिलोकत चला बालका तरुलता। लखा शिंशुपातर बैदेही सुता॥ सियाके लगी जीभ रट राम है। चहूंओर घेरे दनुज बामहै॥ कहीं रैनमें दीपका चंदहै। जलद में प्रभाहीनका चंदहै॥ किधौं हंसिनी काग फंदै फँदी। किधौं लक्षको घेर जिमि पारधी॥ किधौं हंसको आय साया यमी। किधौं

जीभ दांतनके अंदर फँसी ॥ सियाके दि-
लों बीच श्रीरामहैं। सहायकमेरे वो सिरी
रामहैं ॥ उन्हींकाहै हरदम भरोसा उसे।
उन्हीं रामका ध्यान हरदम उसे ॥ उसी
जाय दरख्त हनू छिपरहा। घनी दानवी
हैं करैं अब कहा ॥ त्रिया तिर्जटा एक
दासी वहां। सियाकी हिफ़ाज़त में हरदम
वहां ॥ रखा सिरको ऊपर सियाके चरन।
खड़ीहोके तब वो ये बोली बचन ॥ हुआ
आज स्वप्ना जोहै रैनको। सुनाऊं तुम्हैं
चित्त देकर सुनो ॥ नहीं होय झूठा जोमैं
भाषती। किहै हाथ कंगन को क्या आर-
सी ॥ हनू आय परथम सो लङ्का दहा।
सँहारे दनुज बीर कोटिन महा ॥ कहाहै
ख़बर जा लषन रामसों। सिया राम जप-

ता वह आरामसों ॥ चढ़े फिर उधरसे लषन रामहैं। कपा लङ्क थरथर सकल धामहैं॥ घनी सैन कपि रिच्छकी संघहैं। धनुष बान बांधे दोऊ भ्रातहैं॥ बँधा सेतु दरियाव अद्भुत किया। तरैं जल असम नील नलके छिया॥ उसी ऊपरे हो किया सैन पार। नगर लङ्क घेरा लगाई न बार॥ मरे लङ्कपत बीर सुत जुत सबै। हुआ है जो भूपत बिभीषण तबै॥ तुम्हें ले लषन राम पुष्पक चढ़े। कटक ले सकल संग मोदहि भरे॥ गगनपंथ भगवन्त अवध को गये। मुझे रैनको ख़्वाब ऐसे भये॥ कछुकरोज़ गुज़रे सो होहै सही। जो मैं आज देखा सो झूठा नही॥ ये भी दिन सियाजी गुज़र जायँगे। खुशीके भि दिन

अब नज़र आयँगे ॥ तजौ शोच दिलका न लङ्का रहै। न यह दिन न यह दुख न यह घररहै ॥ उसीवक्त रावन अधम अनभला। लिये संग नारिनको आवै चला ॥ लिये संग औरत भरे रंगमें । किये लेप चन्दन सकल अंगमें ॥ किसीके करौं पान बिरिया धरीं। किसी हाथ चन्दन कटोरी भरीं ॥ किसीकर चँवर छत्र सूरज मुखी। अलापैं रही तान हो इकमुखी ॥ किते कोसो पंखा बिजन ढारतीं। लिये फूल माला गले डारतीं ॥ सियासे कहा क्यों मधूवन रहो। करौ भोग लङ्का सकल सुखलहौ ॥ महलमें जोहों मेरेरानी बड़ी। रहैं वो सदा हाथ जोरे खड़ी ॥ तुझे हरके लायाथ जिस्काम को। हुआ चैन अबतक न दिल

जानको ॥ कहा तब सियाने तुझे क्या
हुआ। कहीं सिंहको ठौर जम्बुक दिया॥
अरे खोज मेरे तू नाहक पड़ा। तेरे कन्ध
पर दूत यमका खड़ा॥ अभी खोल आंखें
जो देखूं तुझे। अभी भस्म करदूं घड़ी में
तुझे॥ सिया बैन सुनकर वो ऐसा जला।
खड़ग खोल दुश्मन सो मारन चला॥
कहा तब मन्दोदर अरे क्या करे। पराई
त्रियाका बधन मत करे॥ सिया आदि
शक्ती है नारद कही। गया राज तेरा मैं
कहती सही॥ पकड़ हाथ उसका महल
लेगई। हनू तरु तरे छोड़ मुँदरी दई॥
परी सीय ओली सो कर गह लई। बड़ी
प्रीतिसे लाय उरमें रही॥ हुआजो अचंभा
सिया मातको। कहूं क्यामैं उस वक्तकी

बातको ॥ येतो बालपनसे रही राम पास।
बिधाता कवनभांति छूटा ये साथ ॥ कहां
सोध पाऊं मैं पूंछूं किसे। इहां कौन लाया
मैं देखूं उसे ॥ न मायासे ऐसी बनौ मुंद-
री। न देवतों से ऐसी बनै मुंदरी ॥ इसी
भांति बहुशोच भारी किया। चहूं दिश
चितै दृष्टि ऊपर किया ॥ तबहि रूप हनु-
मन्त अद्भुत किया। सबै अंगको कीश
लघुकर लिया ॥ तका एक बाँदर बिटप
पर चढ़ा। जपै रामकानाम आनँद भरा ॥
कहा तब सियाने असुर तू अरे। किधौं
आदि गंधर्व्व किन्नर खरे ॥ किधौं देव
दानव किधौं रावना। किया भेष बांदर
इधर आवना ॥ अभी भेद अपना बता तू
मुझे। नहीं आपदे भस्म करदूं तुझे ॥

बिटपसे उतर कप दुहूं हाथ जोर । सिया पांवपड़ बैन बोला बहोर ॥ नहीं देव दानव नहीं रावना । नधर कोइ कपटरूप इधर आवना ॥ सिया नाम मेरा हनूमान है । पठाया हमें श्री लषन रामहै ॥ कवन राम लछमन सो दशरत्थके । दिया चिह्न मुंदरी लखौ हत्थके ॥ दशरथ कवन भूप अजके सुवन । गऊ बिप्र पालन दनुज कुलदलन॥ हनू पुस्त सातक कथा कहगया । सिया को न परतीत इकतिल हुआ ॥ मुझे बात परतीत आती नहीं । भई प्रीति सुग्रीव प्रभुसों कहीं ॥ कहा बालिबध हेतु सुग्रीव का । जटाई मरन हाल सुग्रीवका ॥ हुआ तव भरोसा सिया मातुको । अशीसा बिठाला हनूमानको ॥ परिक्षा मिली जो स्व-

पन था भया। सिया मातुके दिल भरोसा भया॥समुझ रामके दूत बलवन्तको।गई तब सिया भूलदुख दण्डको॥ लखी मुन्द्रि का सिय बड़ी प्रीतिसों। सो पूँछत ख़बर बीर हनुमानसों॥ दोऊ भाइयोंकी कुशल अब कहौ। सदा पास रघुनाथके तुम रहौ॥ छुटा संग हमको बहुत दिन भये। हमे तो दिवस तात युगसम गये॥ हनू यों कहैं मात सीता सुनौ। वृथा चित्त अपने न धोखा करौ॥ धरो मात धीरज सदा दुख नहीं। विधाता मेहर अब करेंगे सही॥ बिना राम जैसी इतेगत भई। तुम्हारे बिना सोई गत ह्वांभई॥ किसी बातका अब न धोखा करौ। हियेका सिया मातु दुख परि हरौ॥ इसीतक लैराम को मैं फिरूं। कहौ

रावनै राम पगतर करूं ॥ कहौ लंक फेंकूं समुद बीचमें । गड़ाऊं असुरपत कहौ कीचमें ॥ पठाया मुझे राम सुध काजहै । बचाया इसीहेतु हम आजहै ॥ कहा राम मारन अपन हाथ सों । इसी से न बोलूं दनुज नाथ सों ॥ जगत मात सुनकर ये बातें हँसी । कहा तात कुशलातहै अब सही ॥ इसीडील पर बातकी आतुरी । असुर सेन बधकी भई खातरी ॥ सकल बीर तुम से जो हो रामदास । तो होगा कवन हेत लङ्का बिनास ॥ हँसा बीर हनुमन्त सुनकर बचन । कहा बैन मीठे सो धरकर चरन ॥ सबन ते मुझे मात लघु लेखिये । कि अदना स चाकर मुझे लेखिये ॥ महाबीर योधा रखे साथ राम । पठाया हमें

नाथ लखके निकाम ॥ कि जब राम रावन जुरे रङ्गमें। तदिन वे कढें बीर जे सङ्गमें॥ बिलोकत बने तासु तनकी छटा। प्रलय कालके मानिये घन घटा॥ बड़े शूर योधा सबै बीरहैं। समर के बिकट भट महाधीर हैं॥ सबै सेन में मासु लघु लेखिये। ये तो गात मेरा ज़रा देखिये॥ बढ़ाडील ऐसा कि सुरपुर छिया। रतनमंडली लौं लँगूरहि किया॥ बड़ारूप बिकराल भारी किया। कँपै देखकर कालका भी हिया॥ कठिन बज्रसे नख सो तिदन खरे। नहीं कोट सिंहन कि उपमा जुरे॥ बिकट रूप दरशाय फिर लघु किआ। पड़ा पावँ परमात देती दुआ॥ हरष बैन बोली जगत मातहै। हुआ अब भरोसा मुझे तातहै॥ महाबीर तुम से जो

हैं रामपास। नहीं शक है लंका के होगा बिनास॥ हनू यों कहैं मात सुन जानकी। लगी भूख भारी न सुध प्रानकी॥ हँसी मात सुन बैन आनन्द के। दिये पांचफल कपिको सुख पायके॥ लिया शीश परधर हनूमानहैं। बड़ी प्रीति सों तब लगाखान हैं॥ अमी से जो मात फल हमको दिया। न खाया उमरभर कभी हम सिया॥ शिफ़ा-रस इन्होंकी न कहते बने। कहत स्वाद बिगरे सो जानत मने॥ कहौ मात ये फल कहां हैं फले। मुझे स्वाद चखते सो लगते भले॥ बिना नाथ ये फल हनू ना भखौं। सरासर हलाहल मैं जीमें लखौं॥ ये तो बाग में फल हनूमानहैं। सो घेरे दनुज भीर बलवानहैं॥ हनू हँसकहैं मात बिनती

सुनौ। कहौं बात जो आप चितमें गुनौ॥ सिया मात दीजै हुकुम जो अबै। तो मैं बाटिका जाय देखूं सबै॥ पवन पूत वहँ जान पैहौ नहीं। रहेकोट राक्षस दनुज गनतहीं॥ महाकाल से दैत्य घेरे जहां पवननन्द क्योंकर सो जैहो वहां। लखै जो असुर कोइ तुमको गहै। इतेकी खबर को प्रभूसे कहै॥ सुनौ मात मैं दूरसौं जाय के। लखौं बाटिका आइहौं धाइके॥ मुझे रामपूछें जो किमिलंकहै। कहा देख आया किला बंकहै॥ तबै राम से मैं कवन बिधि कहौं। इसीहेतु लंका मैं देखन चहौं॥ दिया तब हुकुम सीय सुख पायके। कहा दूरही से लखौ जायके॥

बाटिका लीला ७॥

पवनसुत हुकुम पाय आनन्दके। चला मात सीता के पग बन्द के॥ गया बीर आगे लखा बाटिका। लगा है गुलम जहँ अजब ठाटका॥ पके फल पसँद कर बड़ी प्रीति से। लगा नोचने डालियां ज़ोर से॥ बिनाफल बिटप तोड़ डारे तहां। रखैया चमनके सो बैठे तहां॥ कहूं खायफल तरु उखारन लगा। बिना हुक्मकी कीश कीनी जगा॥ उचक मूरसे वो पकड़ डालियां। घुमाने लगा देके किलकारियां॥ कोई सामने आनेपाता न था। बिचारे रखैयों कि हिम्मत थि कया॥ निमक लंकपतिका जो याद आगया। तो उसवक्त हनुमत को गाली दिया॥ अरे हत कपि तू किधर

आवना । नहीं जानता ये चमन रावना ॥
अभी भागजा जान की ख़ैर है । नहीं तेरे
मरनेमें कुछ देर है ॥ पछाड़ा हनूने उन्हें
तब वहीं । गिरे एक झटके में सारे वहीं ॥
इसीभांति सबको वह मारन लगा । उखा-
ड़े द्रख़्त और फेंकन लगा ॥ बहुर कीक
दैकै सो गरजत भया । प्रलयकाल सा सो
कुलाहल भया ॥ परीकूह मधुबन समर
बहुभया । तहां अक्षनै एक भागुल गया ॥
बड़ी दूरसे मारता है गुहार । नृपत नंदसों
जायकीनी पुकार ॥ न जानूं रहे वो कवन
कंदरा । महाकालसा एकहै बंदरा ॥ मही-
पत चमन सब उखाड़े वहां । कियाधूरधा-
नी दनुज दल वहां ॥

अक्षयकुमार बध ८॥

सुनत बैन उसको न आई जो ताब। वो गुस्साकि खाने लगा पेचताब॥ लिये लक्ष राक्षस उसी दम चला। बड़े धूम से बाटिका को चला॥ बहुत जल्द पहुँचा उधर जायके। जो देखा सकल बृक्ष उचकायके॥ हनूने हैं फेंके समुन्दर के बीच। रहा देख हैरत अजब में वो नीच॥ जो देखा शुमार उनक था तीस लाख। दनुज दल पड़े थे लगी भूमें राख॥ कहा अक्षने कौनरे दुष्ट तू। खड़ाहै चमन में जो मग़रूर तू॥ चमन के सभीतू उखाड़े गुलम। अरे बानरा क्या किया है जुलम॥ रखा एक दरख्त रहैं जहँ सिया। सबै बाटिका धूरधानी किया॥ कहै अक्षपकड़ो इसे ले

चलौं। सबै गर्ब्ब याको भलेकै दलौं॥ इसे जीवताही सो जाकर धरो। इसे जल्द बांधो नृपति ढिगकरो॥ उठाकीश गलगर्ज सुनके निदान। गये सूख हुंकार सुन यातुधान॥ हनूमान यों राक्षसों पर गिरा। मनौं केहरी मृगके झुंडन परा॥ किसी की पकड़ बांह फेंके गगन। किसीको पकड़ मींज डारे पगन॥ किसीको पटक भुम्म में मारता। किसीको पकड़ दांत से काटता॥ किसीके नखनसे बिदारे उदर। किते दुष्ट फेंके इधर वो उधर॥ कितेको समुद बीच वह फेंकता। योहीं ख्यालही ख्यालमें मारता॥ कितेको असुर युत्थकर गह लये। उछलके तिन्हें बृक्षसों घसदये॥ निशाचर घनेबीर योंबिधिमरे। बिना चोट संग्राम

लोटें परे ॥ कितेको धरे तृन दनुज दंतहैं। नमारो हमैं यों हनू सों कहै ॥ किते देखके रूप हनुमंतका। बिधाता बचावे यही लब पेथा ॥ किते सुनके हुंकार जिव तजदिये। किते सोरहे लोथ ऊपर लिये ॥ घुमाया लंगुर जो हनूमानने। नपावे दनुज दल कोई भागने ॥ कोई मापुकारे कोई बापको। कोई हाय करता हुवा तात को ॥ कितेजीव व्याकुल पुकारें परे। किते जीभकाढ़े पियासे खरे ॥ किते को उदर फार आंतें लखे। कितेको नयन मूंद चित पड़रहे ॥ बिकट रणहुआ यों पवननंद सो। नचें भूत बैताल आनन्द सो ॥ छुटी शंभु तारी कोलाहलमचा। न कहते बने हाल अवशेष का ॥ डगी बरतरी और हाहामचा। भरो

साथ पक्का उसी रामका ॥ नहीं युद्धथा था प्रलय कालवो । महाकालहू का जो था कालवो॥ खड़ादूर हनुमत तका अक्षको। झपटजाय हंकार बे पत्तको ॥ करे युद्ध नाहीं कहाजात है। उछलके जो छाती हना लात है ॥ इसी भांति से अक्षकाजी लिये। बचे भागते सो पुकारतभये ॥

दूसरीभेंटहनुमानजीकीसीताजीसे ६ ॥

लियाबार हनुमान जैपत्रको। प्रफुल्लितचला मारकर शत्रुको ॥ धरे हाथ दरख़्त तहां चलगया। सियाके चरण शीशनावतभया ॥ घनी शत्तसीसो खड़ी पास हैं। निहारे तिन्हें क्रोधकर आपहैं ॥ सबै जानकी के शरण को गही। कपींदिहि तबै सीय ऐसी कही ॥ इन्हों का कछू दोष जि-

यनाधरौ । पराई त्रियाका बधन ना करौ ॥ धरम से घटे सर्ब संसार त्राश । किये पापसे बेग होता बिनाश ॥ सिखापन सिया का शिर ऊपर लिया । उधर दशबदन ने ख़बर सुनलिया ॥

कालदण्ड व गजवक्रकावध १० ॥

उसी वक्त दरबार भागुलगया । किसा सबइतेकी सो कहताभया ॥ महाराज लंकेश अनरथभया । कुंवर अक्षको एक कपि हतगया ॥ सबे बाटिका तरु समुद्रहि परे । रहाएक दरख़्त सिया जेहि तरे ॥ किया कीश संग्राम भारी उते । मरे लाख राक्षस हनूकर उते ॥ सुनत भूपसुत हाल ठगसा रहा । अरे भागुलो बैन कैसा कहा ॥ गरज भूम लंकेश भूमें परा । सकल

लंकमें शोच भारी परा ॥ हुवा क्या हुवा क्या कहा बैनयों। ढुरे आंशुधारा सकल नयनसों ॥ बदन धोयके बार मंदोदरी। उठाया नृपत को बिनय बहुकरी ॥ उठा भूप तब चित्त धीरज गहा। सजाओ सकल सैन ऐसा कहा ॥ किधौंरामका दूत यह छुद्र है। प्रलय कालका सा महारुद्र है ॥ उसे खौफ़ मेरा ज़राना लगा। मनै दशबदन यों बिचारन लगा ॥ सचिव बात हमसे कहौ मंत्र आज। कहौ बात हमसे करो यत्न आज ॥ सचिवयों कहा लंक पति अबसुनों। यहै मंत्रको आप जीमें गुनों॥ बड़ेके सदन में बड़ा आवता। न जम्बुक कभी सिंहपास आवता ॥ कहाभूप दुश्मनको लावो पकड़। लेआवो ज़ंजीरोंमें

जाकर जकड़॥ उजारी है उसने सकल बाटिका। लगेथे गुलम गन अजब ठाठका॥ कहां भाग बाचै जो मारा सुवन। न उसको जगह है चतुर्दश भुवन॥ भई भीरभारी दनुज के दुवार। खड़ेबीर योधा लड़नको तयार॥ बुलाया महीपाल योधानको। महाकाल से कालके ज्वानको॥ दिया फिर हुकुम अब न देरी करो। चलो बीर जल्दी उसे जाधरो॥ लिया जम्बुमाली तबै पानहै। नपावे भजन शत्रु लै जान है॥ लियासारथी रथ सहस संगमें। बड़े बीर योधा कुलिश अंगमें॥ बुलाया दनुज एक परचंड है। उसे नाम कहते सो कालिंद्रहै॥ लियाजीति जिन कालके दंडको। कियाथा समर जिन लखौ दंडको॥ सह-

स दस द्विरद बल जिसे अंगमें। करे क्यों न वह ख़्याल रण जंगमें॥ असीलाख योधा किया साथमें। हरष पान बीरा दिये हाथमें॥ दिया दशबदन गजबक्त्राहि पान। बड़ा डील योधा अचलके समान॥ उसीके दशन दश गजातुल्ल हैं। सहस बीस कुंजर दिया हुल्ल हैं॥ बिदाकर सैन यह नृपति ने कहा। कि पानी सकल लंकका राखना॥ बजी दुंदुभी सो धुकारे छई। चलत सैनके अर भारी भई॥ चलत दल डगत मेरु महि कंपिया। सो रथ रज उड़त नभ सुरज झंपिया॥ लखा बाटिका दल सबै आयके। रहे बीर जीमें सो दुख पायके॥ हनूमान आवत लखा दल सबै। सिया मातुके चरण बंदे तबै॥ हुआ सामने

कूहकर चिंकरा । मनो केहरी झुंड गज में प
रा ॥ सहस त्रीस कुंजरथे रणमें खरे । सुनत
सिंहनादहिं सबै थरहरे ॥ जहँ तहँ मतंगज
भगे हैं सबै । उठा बीर हनुमंत गर्जा तबै ॥
पकड़ इक मतंगज कपी ताककर । हना
गज बक्त्राहिके नाकपर ॥ ज़मीमें गिरा
नाक बल छुटवो । बही रक्तधारा गया स्वर्ग
को ॥ लिया दन्त नासहि पकड़ कीशहै ।
कहालै दिखाऊं असुर ईशहै ॥ किती ज़िंद-
गानी जो अबजी रखौ । करौ आज संग्राम
सुरपुर लखौ ॥ कुंजर सहस हाथपर रख
लिया । घुमाकर पवननन्द के शिरदिया ।
लखा कीशने बीचही गहिलिया । सोमारा
उलटकर उसीशिर दिया ॥ सहस दसकरी
बल जिसे अंगमें । तिसे मारडाला हनू

जंगमें ॥ जिसे रामका ध्यान हर आनहै। उसे कौन मुश्किल यह मैदान है ॥ करी-मुख सबै प्रान रणमें तजे । उसवक्त का-लिंद्र रणमें गजे ॥ लिया कालदण्डहिं तहां हत्थमें । सो मारा फटक कीशके मत्थमें ॥ जबहि रैनचर दंड कपि शिरदिया । सम्हर बीर लंगूर आगे किया ॥ दिया बज्र लंगूर रिपु दण्डहै । मचा युद्ध अस्मान परचण्ड है ॥ लड़ाई सिया लख जो चिंता बढ़ी । तबै बात याहीसो मुखसे कढ़ी ॥ सबै शूर सों आज रण जंगमें । महाबल बढ़े अंश कपि अंगमें ॥ असीसत सियाके हनूबल भया । दनुजके तुरत बल सबै नसगया ॥ बहुर हांकदे कीश दनुपर गिरा । सकल राकसन बीच खलबल परा ॥ तबहि काल-

दण्डहि उठा रोसके । महानाद करता बि-
कट कोपसे ॥ उछलकर हनू चढ़गया कंध
पै । तऊ कुछ फिकरहै नहीं अंधपै ॥ हनत
मुष्टिका शीश उर धसगया । अयँठ अंग
जहँका तहां सब गया ॥ फेंका उसको लं-
गूरसे बांधकर । पड़ा दूर बारिधके उस
पारपर ॥ जबै जीव बनके बहुत खुशहुये ।
बिधाता जो भोजन बिना श्रम दिये ॥
हुआ ज़ोर फिर अब दुहूं ओर सों । उसे
मारियो मारियो जानसों ॥ जुरे राक्षसा
सब करैं गुल महा । हनूभी इतेसे जो गर्ज-
त भया ॥ उचक पेड़ भारी जो हनुमत
ठिले । यहां तीर तरवार भारीचले ॥ उधर
से चलें सांग गोला कमान । इधरसे हनू
का सो गिरवर पखान ॥ रहे जो दिलावर

दनुज आइके। हुवे सामने वे हनूमानके॥ बहुरघन गरज कपि उन्होंपर गिरा। मनौं झुंड हाथिन में केहर गिरा॥ किसीको नखन जाय दन्तन धरै। किसीको नखन मार व्याकुल करै॥ कितैको नखनसे उदर फाड़ता। कितैको सो करसौं पकड़ मारता॥ किसीके पकड़ पांव पटका वहीं। कुचल डाले पांवोंसे बहुतक वहीं॥ कितैको सो फेंका तरफ़ आसमां। कितैको सो फेंका समुद बिच वहां॥ लखा जम्बुमाली हनूमान है। झपेटा भुजनका दिया आनहै॥ धक्काके लगत मुर्छ धरनी पड़ा। सँभलकर हनूसों वो फिर भिरपड़ा॥ हनू कूद पहिले लँगूरन कसा। भलीभांत राक्षस को लीना फँसा॥ नखन दन्तहू सों घने दावकै।

घुमाकै फटकपार दरियावके ॥ किया बीच ही गीधभख तासुको । सो पहुंचा असुर आपनी मीचको ॥ दै हुंकार हनुमन्त दल पर गिरा । मनौं गायपर बाघ औ चित पड़ा ॥ रथोंको कुचलकर समुद डालता । मतंगज पकड़कर कुचल डालता ॥ कबहुँ रथ पकड़ चूर कर डालता । कुंजर सुंडकर दन्त धर फाड़ता ॥ शिला एक योजन भरे का लखा । तिसे खींचकर आप भुजपर रखा ॥ उसी शिलको देपटका उनपर वहीं । सँहारी सभी फौज निश्चर वहीं ॥ असी लाख योधा जो रणमें खरे । सभीवो शिला के तले दबमरे ॥ बढ़ी पूर सरिता रुधिर की तहीं । चले बह द्विरद थाह पावैं नहीं ॥ बहा पूर दरियाव गैवर घने । मगर सूससे

रैनचर कुल बने ॥ नचैं भूत भैरोंसो आनन्दसों। लगे ख्याल होने तहां छन्द सों ॥ जुरीं योगिनी गीतगावें जहां। पियें रक्त रेला गलेला तहां ॥ बिकट रूपधर कालका वह खड़ी। खड़्ग एककर एक खप्पर धरी ॥ बड़े केश छूटे नयन लालहैं। जिसे कालभी देख बेहालहैं ॥ महादेव आये चढ़े नांदिया। घने भूत बैताल संगे लिया ॥ लखत हरफिरैं मुंड उरमाल को। सो देखें सकल देवगन ख्याल को ॥ बढ़ी रक्तधारा तिहूंपुर ठिला। उसीमें बयल नांदिया बह चला ॥ बहा नाग चमरू सो डमरू बहा। बहत्त जान गौरीको ज्यों त्यों गहा ॥ गया छूट पशुपति अपुनभी हिला। बड़ी मुश्किलों से वो बैला मिला ॥ पकड़ पूंछ उस

की नके धारवो। बहुत दिक़्क़तोंसे हुये पार
वो॥ गया मालले ने गया गांठका। तमा-
शा अजब सो भया ठाटका॥ शृगाली घने
गीध अरु कागहैं। करें बैठ भक्षण सो
अनुरागहैं॥ असीसें सबै बीर हनुमन्तको।
बिनाश्रमके पाया बहुत खानको॥ पड़े
सामने सो हुवे सब बिनास। बचे सो भगे
जाय रावणके पास॥ सकल जीत राकस
पवननन्द ने। सियाके किये जाय पग
बन्दने॥ कहीमात हँस तात संग्राम जीत।
सकल रणको जीता बड़ेहौ अभीत॥ हता
दल दनुज मात रघुबर प्रताप। घटाया
सकल रैनचर बंश दाप। तुम्हारी कृपातें
फ़तह यह लिया। मैंहूं दीन बांदर कहा
बलकिया॥

हनुमानजी का ब्रह्मफांसमें फँसना ११॥

बचे भाग राकस नृपतिपै गये । गई डूबसेना संदेशा दिये ॥ महाराज जल्दी ख़बर लीजिये । सो दुश्मनसे अबतो बचा लीजिये ॥ जिते शूर योधा सँभरकर गये । समरके जुरत युत्थ सुरपुर गये ॥ असी लाख योधा सबै मिटगये । हनूने सबनको शिला तरदये ॥ सहसबीस कुञ्जर सहज मारिया । सो राकस घने बीर संहारिया ॥ उठा कोपकर बैन सुन मेघनाद । करोरे न कोई असुर जी विषाद ॥ हुकुम अब पिता जी हमें कीजिये । कछू संग मेरे सयन दीजिये ॥ जोपै चाहिये कीशजी नाशको । मँगावो जलद ब्रह्मके फाँसको ॥ महाराज कर अंग ... के । अभीमैं लेआऊं उसे

बांधके ॥ सुनत भूप बिधि फांस तुरतहि दिया । बहुतसैन सुतसंग रावन किया ॥ जबहि बीर घननाद रथ चढ़चला । सहित मेदिनीशेषमस्तक हला ॥ लखाजाय सं-ग्राम भारी परा । तबहिं बीरदन्तहि नृपत सुतधरा ॥ महाबीर योधा रहे कोटजे । सो मारे हनूके धरनि लोटते ॥ लखत मेघना-दहि हनू आइया । घना अंग आनन्द उप जाइया ॥ द्विरदसब पकर ढेरकर गहलियो । सबै ऊपरे आप बैठत भयो ॥ कबहुँ देचुटक्क तान मारन लगा । कभी गूंजता बीर रसमें पगा ॥ कबहुँ शीश मटकाय गर्जे खड़ा । अरे कम्बखत सिंहके मुख पड़ा ॥ पटक भुम्मपर रोष लंगूरको । कभी दे चपेटा फिरत शूरको ॥ कभी दन्तसों दन्त कट

कटकरै। कभी ठोंक भुजदण्ड दुश्मन धरै॥
हनूके लखत ख्याल तब कोपकर। लिया
ब्रह्मफांसी बड़े क्रोधकर॥ हनूके गरे फांस
जब धरदिया। धरारूप छुच्छम निकल
वो गया॥ जो देखा बरमफांस निरफल
गया। दनुजका सकलगर्व्व तब नशगया॥
हनूने ध्वजा रथको चकचूरके। तुरंग चार
हाथी सबै धूरके॥ कचेरा शिला स्वारथी
को जबै। गयेधूर मिल हाड़ तनके सबै॥
उठा फेर हनुमन्त जब कोपके। भगा वीर
शक्कार तब कंपके॥ उसीवक़ विधि आइ
हनुमानको। कहा राखिले आज परमान
को॥ कुलिश अंग तेरे करेका दुवन। गहौ
बांह मेरी अबैहौ सुवन॥ बिनय मान हनु-
मन्त फांसी परौ। रहे आज परमान सो

तुम करौ ॥ बिधाता बहुत भांत अस्तुत
किया। हनूमान वो सीख शिरपर लिया ॥
बिधाता हुकुमसे हनू थिरभये। सबै चंच-
लाई तबै तजदिये ॥ दिया डार फांसी हनू
के गरे। पकड़ बीर घननाद मोदहिं भरे॥
चला ले घसीटत हनूमान को। फिकर
कुछ बँधे पै नहीं ज्वान को॥ घने मुद्गरों
से उसे मारते। थके थे हनूसुख बहुत मा-
नते॥ रहे थक दनुज जब सबै मारकै।
लिया कपि करवँटा तबै लोटिकै॥ इधरभी
अरे आय दाबो सबै । नतौ मारडारौं मैं
सबको अबै । कबहू पग पसारे अनूतर
कहे। चले दौर कबहूं अचल होरहे॥ कभी
बैठ जावे जो मग बाँदरा। तो खींचें हजारों
न सरके जरा॥

जानादरबाररावणमेंहनुमान जी का १२॥

चलाले बड़े कष्टसों लंक को। सभा लेगया भूप सुत बंक को॥ यही बांदरा लंक नाशा भुवार। तिसे बांध लाया मैं लागी न बार॥ कहै दशबदन कौन है तू अरे। हने अक्षको जी न शंका धरे॥ कि तूने सुना था न कानौ मुझे। सो मग़रूर देखूं बड़ा मैं तुझे॥ उजाड़ा सरापा मेरे बागको। न रक्खा कोई पेड़ भी नामको॥ कहा तब हनूने कि ऐ दशबदन। न इतना तो दिखलाइये बाँकपन॥ मैंहूं दूत रघुबर नहीं जानता। पवनका तनयहूं जो पहिं- चानता॥ पके फलको चक्खा लगी थी जो भूख। सो आदतसे आपने उखाड़े वे

रूख ॥ किसीका तो मैंने न था कुछ लिया । सो नाहक ये तूफ़ान बर्पाकिया ॥ मुझे आय जिस जिसने मारा वहां । सभों क मैं पलमें पछाड़ा वहां ॥ तु किस रामका दूत ऐसा निपाक । लियाकाट तेरी बहिन को जो नाक ॥ उसी रामका दूत मैं रावना । सिया की ख़बर को इते आवना ॥ उसी रामके बलसे मैंने यहां । संहारे कठिन बीर योधा महां ॥ वही रामचन्द्र पूर्ण अवतारहैं । सकल देवतों के वे सिरताजहैं॥ जहां देखो व्यापक वही रामहैं । परब्रह्म आनन्द के धामहैं ॥ बना भूप होकर असल चोर तू । यही बात सीखा गुरूसे है तू ॥ अभीतक भलाहै सिया मातको । हवाले करो जाय श्रीराम को ॥ शरण जा-

नकी नाथ अब तुम गहौ। रहे राज लंका सकल सुखलहौ ॥ करेंगे क्षमा तेरे अपराधको। लगेगा न बट्टातेरे नामको ॥ नहीं तो ये दो दिनकी है चांदनी। न साबित बचा कोई गरबका धनी ॥ ये सब खेल दम में बिगड़ जायगा। फफोला स पानी का फुट जायगा ॥ हँसा रावना सुनके इस बातको। गुरू तो मैं पाया इसी कीशको ॥ दिया क्या सिखापन भलाहै मुझे। करूं गुरु कि सेवा मुनासिब मुझे ॥ बँधेहू अरे ढीठ बातैं करै। कहीं जीवकी तू न शंका धरै ॥ हनू फिर कहा सुन दनुज बावरे। नयन लाल करके न घुरकावरे ॥ बहुत मुहँ से ताक़त न भाषै अभी। जो गरजे सो बादल न बरषे कभी ॥ मैं सिर्फ आन इस

फांसकी मानता । अरे मूढ़ मुझको नहीं जानता ॥ दनुज युत्त सबै लंक दधि बोरि हौं । दशौं शीशतेरे अभी तोरिहौं ॥ कहा राम मारन अपन हाथ सों । बचाया इसी हेतु मैं जानसों ॥ कहो तो भुजा बीस तोड़ूं अभी । सभी लंक डारूं समुद में अभी ॥ अरे अन्ध दशकन्ध जाने नहीं । पकड़ पग पछाड़ूं जो तुझको मही ॥ अनुज पूत परवार सब संहरौं । हुकम राम नाहीं इसी से डरौं ॥ सुनत कोपकर भूप रावण कहा । अरे बन्दरा बेशरम तू महा ॥ समुझ दूत तुझको बचाया अबै । नहीं मरचुकाथा तु कबका तबै ॥ अरे राक्षसो सब इधर आयकै । कढ़ोरौ लेजावो पकड़ पाँव कै ॥ अभी खाल खींचो भुसासों भरौ ।

हतौ जाइ इसको जुदा शिर करौ ॥ कहा तब विभीषण महीपाल सों। नहीं बदसलूकी उचित दूतसों ॥ नसीहत तो ऐसी जो चितमें धरौ। बिना पूंछ इस बाँदरा को करौ ॥ बहुत पूंछ होती है प्यारी इन्हें। बहुत जानसे अपने प्यारी इन्हें ॥ कटे पूंछ इसकी नशे बल सभी। बने बात बिगड़ी हुई सब अभी ॥ उसीवक़ रावण जो बोला कड़े। अरे राक्षसो क्या हो देखत खड़े ॥

लङ्कादहन १३ ॥

भयङ्कर असुर तब हुकुम पायकै। नगर केबसन तब सबै लायकै ॥ न जूना न याना पुराना बचा। सकल नग्र में ये कोलाहल मचा ॥ मुदित कीश लंगूरमें जोरके। लपेटा घना तेल में बोरके ॥ जेता लंक में

सूत रेशम रसा । दनुज सब हनूके लँगूर-हि कसा ॥ तिहूंपर न पूरा परा पूंछको । किया तूल ऐसा सो लंगूरको ॥ हुआ ख़र्च कपड़ा वो तेल इसक़दर । रही रुई भी लंका में नातारभर ॥ जलानेको बाती न जलने को तेल । रुई तेलकी वो मची रेलपेल ॥ वो आंखों के अन्धे बहुत खुश हुये । कहूं क्या कि जामें से बाहर हुये ॥ कहा क्या तमाशा अजब आजहै । बड़े ठाटका दिन भया आजहै ॥ सज़ा तो मुनासिब दिया लंकराज । न फिर भूलआवे कोई रामकाज ॥ कहा भूप आगी लगादो अबे । हनूफाँस गलसे निकाला तबे ॥ सम्हर ज्वाल लागी जबहिं पूंछ में । मुदित मन पवनसुत हुये चित्तमें ॥ कहा आज

देवतों ने कीहै महर। करूं मैं सकल राक्ष-
सों पर कहर॥ अधर रवि भी पूरी कला
सों तपे। चली पवन उनचास देवता कपे॥
था अन्दाज़ ऐसा पवनका तभी। सुनाहै
हुआहै न होगा कभी॥ बड़ी गर्जनाकी
हनूमानने। कँपे देव दानव वो किन्नरमने॥
हमल औरतों के भि सब गिरपड़े। कोई
जहँ खड़े थे रहे तहँ खड़े॥ महल में गया
कूद हनुमानहै। बढ़ाया सो लंगूर असमा-
नहै॥ लंगूरहि भँवाया हनू जोरसों। लगा
लंक जरने चहूं ओर सों॥ लगी आग
लंका जरत धामहैं। पियासी पियासी रटत
बामहैं॥ जरे मस्त हाथी तुरीरथ घने।
घने ऊंट खच्चर कहांलोंगने॥ उठी आग
ज्वाला महा धूमहै। जरैं सब दनुज कुल

गिरे भूमहैं ॥ जरें सब जो रानी अटापर चढ़ीं। सती चेटका जनु सो यों घृतबढ़ीं॥ झकोरें उठें गन्धशाला जरैं। जरैं रानियां नैन आंसू ढुरैं॥ मचाथा जो खलबल सबै लंकमें। कहूं क्या मैं बिपता जो उस वक्त में॥ कनक कोट जहँ तहँ टिघल के चला। गिरा मधु सहस धार दधिको मिला॥ जरत लंक रावन मनै थरथरा। अरे कुम्भकरना तु नाहक़ मरा॥ पड़ाहै वह अलमस्त सोता हुआ। अरे हाय भाई तु नाहक़ मुआ॥ किसी ढबसे उसको बचावो कोई। सो इतना तो लेलो सुयश अबकोई॥ कहै रावना यों सकल सैनसों। ढुरैं आँसुधारा सकरु नैन सों॥ सबै मिलके हिम्मत दनुज अब करौ। समुद नीरले कुम्भकरना धरौ॥ जबहि बैन

लंकेश ऐसे कहे। समट के सो राकस यही मत गहे॥ रसी बांध अंगहि घसीटतभये। सो ज्यों त्यों समुद्र तीरको लेगये॥

हनुमानरुद्र १४॥

जो चिन्ता बहुत भूपके उरभई। वहीं नार मन्दोदरी आगई॥ पड़ी पाँव बिनती वो करनेलगी। वो समझाय रावन से कहने लगी॥ न लाये कोई बात तुम ध्यान में। मिलाया ये सोनेका घर ख़ाकमें॥ अभीतक भलाहै बचन मानके। हवाले करौ सीय हनुमानके॥ करौ उज़र तुम जाय तक़सीरका। कहौ दासहूं नाथ मैं आपका॥ वो बजरंग पती झटकरेंगे महर। न कम जान उनको वे अवतार हर॥ कि है रुद्र जिसका तुम्हें ध्यानहै। उसींका वे

अवतार हनुमानहै ॥ वहीं ध्यान उसको
तुरत आगया। धुवाँसा सो उस वक़्त मू
छागया ॥ कहा मन में वाजिब खताहैं
मेरी। कहूं किससे मैं अब करूं क्या हरी ॥
दसौंशीश दशरुद्र अर्पण किया। नहीं
ख्याल ग्यारह क मैंने किया ॥ खटकताथा
लेकिन वही रातदिन। उसी भूलने बद
दिखाये ये दिन ॥ हनूमान बेशक वही
रुद्रहैं। पवन नन्द ये ग्यारवें रुद्रहैं ॥ इन्हें
भी चढ़ाता जो इकबार शिर। तोकाहे को
लुटताथे सोनेक घर ॥ गया वक़्त अब हाथ
आता नहीं। बनाने से अब कुछ तो बनता
नहीं ॥ लगा आगपानी को क्या दौड़ना।
यही है मुना।सिब कि चुप बैठना ॥ कहा
ऊपरे मन से ऐ सुन्दरी। ज़रा बातमें ख़ब

तूभी डरी ॥ भला क्या वो बाँदर करै सा-
मना। कहां बाँदरा वो कहां रावना ॥ मैं
इस वास्ते बोलताहूं नहीं । लड़े नीच से
कुछ भी हासिल नहीं ॥ जो मारूं तो हो
नाम बद ज़ाहरा । कि रावन ने माराहै
इक बाँदरा ॥ न इस्से भला कोइ मुझको
कहै। भला कौन ऐसे बखेड़े सहै ॥ तुही
कह देहै कोइ मुझसा बली। चतुर्दश भु-
वनमें पड़ी बेकली ॥ नरो नाग देवता वो
किन्नर जिते। सबै नाम रावन सुनत काँ-
पते ॥ सो हाज़िर रहैं सेवा में वे सब मेरी।
गई है मन्दोदर अक़्ल कहँ तेरी ॥ मैं सीता
तो अब फेरनेका नहीं। मैं अपने को बट्टा
लगाता नहीं ॥ कहूं तुझसे मैं और इक
बातको। कि हरलाया जिस अर्थ मैं सीय

को॥ नहीं कामना वो फलीहै मेरी। फले
गी अवश मुझको है खातरी॥ तु समझा-
वे क्या मैं हुं खुद जानता। सिखापन तेरा मैं
नहीं मानता॥

व्याकुल होना राक्षसों का १५॥

गरज़ लंकपुर खूब जब जरपचा। कृपा
राम की घर बिभीषन बचा॥ हनूजार डारा
सकल लंक ग्राम। बचाहै न कोई नृपत
रंक धाम॥ हनूमन्त योधा अपर बलबली।
न कोई यतन पेश उसके चली॥ अजब
ठाट से लंक जारी वहां। रहा कोइ मुछि-
यान साबित तहां॥ किसी की जो डाढ़ी
तो मूछैं नहीं। किसी की जो मूछैं तो डाढ़ी
नहीं॥ वह चेहरा जो बिगड़ा अजब हाल
था। कोइ अपने घर जाने पाता न था॥

वहीं राक्षसी उनके दे गालियां। चलेआते हो अहमको तुम कहां॥ भला दूसरे घर इजाराहै क्या। कहा नारियो तुम ये कहती हो क्या॥ हमाराहै घर ये हमारी हो तुम। भली भूलगई एक सायत पै तुम॥ कहा चल निकल मर्द बनने चला। यही घरमें घुसनेक अवसर मिला॥ जले घर हमारा खुशी हो तुम्हें। न बातें बनाकर सिखावो हमें॥ घरैया हमारा नहीं है जो घर। न मालुम कहां है वो इस वक़्तपर॥ कहा हम वहीं हैं जरा गौर कर। न पहचानों सूरत तो आवाज़पर॥ कहा तब तुम्हारी ये क्यागत भई। वो मूछें वो डाढ़ी कहां सब गईं॥ कहा ये फ़ज़ीता उसी कीशने। किया सब का गये जो उसे देखने॥ न फिर हो

कभी भेंट उस कीश से। बड़ी आज कि-
स्मत बचे मौतसे॥ सकल लंक कपि घूम
देखा तबै। कि साबित बचाहै न कोइ
घर अबै॥

समुद्र स्तुति १६॥

वहीं कूद आया समुद पासहै। बुझाऊं
मैं लंगूर यह ध्यानहै॥ जो देखी समुन्दर
ने ज्वाला बिशाल। वो कांपा बहुत कुछ
हुआ मन बिहाल॥ कहा हे हनूजी कृपा
अब करौ। न मुझ दीनपर जब्र ऐसा करौ॥
कहीं पूंछ डाली जो जल बीचहीं। तो इक
जीव जीता बचेगा नहीं॥ मैं आप अपने
लहरों से इक आन में। बुझा पूंछ देउं
बातकी बातमें॥ हनमानजी की हुई तब

महर। वहीं फिर समुन्दर ने फेंकी लहर॥

सो उस वक्त गरमी से कपिका तहीं। ख-
साबिन्द मगरीने लीला वहीं॥ सो मकर-
ध्वज उस्सेहि पैदाहुआ। जो रखवाल
महरावना का हुआ॥

बिदा होना हनुमान जीका १७॥

बुझी पूंछकी जब वो सब आगहै।
हनू फिर सियाके गया पासहै॥ किया ब-
न्दना नाय सिरतासहै। विदाकी सिया
मातु अब आशहै॥ चरन को लखूं मैं ल-
षण रामके। लेआऊं उन्हें मैं अभी जाय
के॥ लगी जानकी आशिषा दे कहन।
किया सुत भली भांति लङ्का दहन॥ ये
तो मात रघुनाथ कीहै दया। कि जिस
कारने मैं फतह यह किया॥ कहा तात

जाकर प्रभूसे कहौ। जो पे प्राणको मेरे

राखन चहौं ॥ लषण राम सों मम बिनय कीजिये । इहां लाय उनको सुयश लीजिये ॥ कटुक बोलमैं जो लषणसों कही । हिये आपने मानिहै सो नही ॥ जो पै राम लछमन तुरत आवहीं । तबै तो जियत मुहिं यहां पावहीं ॥ कछू चिह्न माता हमें दीजिये । सो लैराम की आगुही कीजिये ॥ बिना चिह्न परतीत आवे नहीं । यही हेतुसों आपसों मैं कही ॥ चुड़ामन दिया सीय सुख पायके । लषण रामकर देहु तुम जायके ॥ सिया के चरन बन्द आनन्द कन्द । चला सिन्धु के पार तब पौन नन्द ॥ उछलके गया कूद दधि पारको । मिले तब हनू चारहूं यारसो ॥ चलतही अवध पांच दिन

का कर। मिले आयकर काज दिन तीसरे।

किसालंक की आदि से जो भई। हनू यार मोहीं सबै कह दई॥

सुग्रीव मिलाप १८॥

जो सुग्रीवका था बड़ा इक चमन। गये पांचो उस बाग़में हो मगन॥ वो चुन चुन पके फलको खाने लगे। दिलों बीच मौजें उड़ाने लगे॥ डरा बाग़वां जल्द भागा गया। कहा बाग़ सुग्रीव सब लुटगया॥ सुनतबैन सुग्रीव आनँद भया। कहा कीशने काम पूरन किया॥ सियाकी खबर को न लाते जो वो। तो फल मेरे मधुबन के खाते न वो॥ सो इतने में पांचो वो लेतेहि नाम। नलो नील अङ्गद हनू और जाम॥ पहुँच गये वो जाकरके सुग्रीव पास। गलेसे मिला वो किया मन हुलास॥ नहीं हाल सारा

हनूमानका । कहा जामने हाल सब लंक का ॥ जलाना अजब ठाटसे लङ्कका । वो मरना भी दशकन्ध केनन्दका ॥ सो सुग्रीव सुन सुन ये सब बातको । हिये से लगाता हनूमान को ॥ रखी बात मेरी जो इतना किया । कि डूबत से मुझको बचा तू लिया॥

श्रीराम मिलन १६ ॥

चले तब वे सब रामके पासहैं । कटक में मिले जायके आपहैं ॥ हनू रामके पायँ योंहीं गहा । मनो धन अचानक दरिद्री लहा ॥ चुड़ामन वहीं राम आगे धरे । कथा लंककी जाम सब उच्चरे ॥ चुड़ामन सियाका जो था छबि कि खान । लगायाहिये मांझ करुनानिधान ॥ दुवौ बन्धु के गात आनँद भये । वहीं छिन सकल सो-

ष प्रभु तजदिये॥ सिया का संदेश। लषण
रामसों हनू ने सुनाया सभी आदि सों ॥
सिफारश किया राम हनुमानकी । अंदेशा
गया अब मिलें जानकी॥ बिहँसके रमा-
नाथ कपिसों कहा । सदा हम तुम्हारा
भरोसा गहा ॥ जोकुछ कामनाहो ये तेरे
दिले। पवनपूतले मांग तोही मिले। सुवन
अंजनीके सुनत राम बैन । गहा पांय प्रभु
के किया चित्तचैन ॥ कृपाकर जो यह बर
रघूनाथ देहु। बढ़ै तुवचरन सो सदा मम
सनेहु ॥ मनोरथ फलै राम यह बरदिया।
कपिंदहि हरष अंकसों गहलिया ॥ लषण
सम हमारे हनूमानहौ। सो शत्रू बधनहेतु
मम बानहौ॥ नलोनील सुग्रीव अंगदखरे।
साहितजाम कपिरिच्छ आनँद भरे॥ हनू

की सकलसेन अस्तुत किया। सुफलजन्म कपि धन्य जगयश लिया॥ किया लंक रनघोर हनुमान जोर। यथामति सो बरनन कियाहूं मैं थोर॥ सदा वह बली ज्ञान बजरंगहै। कहा खूब हनूमान रन जंगहै॥

ग्रन्थ लेखक २०॥

दया बख्शिशरामहु पै अब कीजिये। बसैं रामसीता सदा ममहिये॥ पवन नन्दका ध्यान हरदम रहै। उन्हीं के भजन में मगन मन रहै॥ न छन्द और दोहोंसे था मुझको काम। सिरफ़ एक सुमरन किया राम नाम॥ न गुनवन्त पढ़ दोष लावें इसे। जोहो भूल कोई सुधारें उसे॥ रहूं मैं सदा दास हनुमानका। करम मुझपै हरदम रहै रामका॥ ठिंगई रामहै बापका मेरनाम। है नाम

गोवर्द्धन बड़े नेक नाम ॥ जिवनलाल प्यारे जो मशहूर आम। सोलगतेभतीजे मेरेला कलाम ॥ गुबर्द्धनजी के आंख तारे हैं वो। बुढ़ापे के बेशक सहारे हैं वो ॥ घसीटे हैं छोटे बड़े तैन मन। ये दोनों हैं रनजोर जीके सुवन ॥ ये रनजोर जी भान जे लागते। सो सबहैं जबलपुर में सुख मानते ॥ मुझे रामने तीन बेटे दिये। सो तीनोंको सब गुनसे आगर किये ॥ कहूं नाम तीनों का सुन लीजिये। सो जेठे का खुमान सिंह लेखिये॥ जगन्नाथ दूजेति· जे रामनाथ। ये दोनों रहैं प्रीति से एक साथ ॥ जगन्नाथ हेडक्लर्क बाबू पुलीस। अभी उम्र उनकी है बर्ष इक्कबीस ॥ सो इंगलिश वो हिंदी वो उड़िया सभी। रहा

वन। भलाकौन आवेगा तुम्हरे शरन॥
इसीसे ये बिनती मेरी मानिये। गहे बांह
की लाज अब राखिये॥ जो बांचे सुनावे
कथा ये जिसे। छुटैं श्रोता बक्ता दोऊ बंद
से॥ सो बजरंग बलीकी कृपा दृष्टि से।
करैं सैर बैकुण्ठ आनन्द से॥

दो०।जैजैसीतारामकी जै लक्ष्मण बलवान।
जै कपीश सुग्रीव की हर्षि चले हनुमान॥
जै अंगदसुत बालिकी जै हनुमत बलवान।
हर्ष चुड़ामन सीयका दीन्ह रामकहँ आन॥
हर्ष राम उरलायऊ प्रफुलित मन आनंद।
जै जै जै हनुमतबली जै जै करुणा कंद॥

इतिश्री हनूनाटकसमाप्तम् शुभम्॥

❋ इश्तिहार ❋

हनुमन्नाटक क़ीमत ।)

श्रीरामानन्द चतुरदासकृत श्रीरामचन्द्रका चरित्र जन्मसे लेकर गद्दी पर्य्यन्त अनेकप्रकारके छन्दोंमें वर्णित है॥

मयंकमञ्जरीनाटक क़ीमत ।)

भाषा किशोरीलालकृत–इसमें मयङ्कमञ्जरीका नाटक अनेक प्रकारके राग, छन्द और ललित वार्त्तिक भाषा में वर्णित है यह नाटक बहुतही उत्तम बनाहै॥

अभिज्ञानशकुन्तलानाटक क़ीमत ।≡) पु०

श्रीकवि कालिदासकृत संस्कृत से पटियाला राजधानी नारनवलसमीपवर्ती निवाजपुरनिवासी श्रीरामप्रसादात्मज लक्ष्मीनारायणने अतीव सुन्दर प्रतिबिम्ब भाषा में प्रस्ताव किया इसमें शकुन्तलाका पुरुवंशी राजा दुष्यन्त से गान्धर्व विवाह और दुर्वासाऋषि के दिये शापवश वियोग दुःख तथा पुनः संयोग सुख व चक्रवर्ती पुत्रकी प्राप्ति सुन्दर रीतिसे वर्णित है॥